REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

आधुनिक नाटकों में लोक तत्त्व

पिंकी देवी
नेट (हिन्दी) हिसार (हरियाणा)

शोध आलेख सार –

भारतीय साहित्य में नाटक परम्परा पश्चिमी देशों के नाटकों से आई है। भारतेन्द्र युग से नाटक लिखे जाने लगे थे। नाटककार अपने नाटक के माध्यम से जनता को संदेश देने की या किसी कुरीति पर प्रहार करने की कोशिश करता है। नाटककारों ने 'लोक तत्त्व' की मदद से वर्तमान परिस्थितियों को दिखाने की कोशिश की है। मोहन राकेश, सुरेन्द्र वर्मा, वृन्दावन लाल वर्मा, दुष्यन्त कुमार, लक्ष्मीनारायण लाल आदि नाटककारों ने ऐतिहासिक पात्र व कथा लेकर वर्तमान में मानव की कठिनाइयों, घुटन, पीड़ा, अंतद्वन्द्व को रंगमंच पर नाटक के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है। लोक तत्त्वों की मदद से ये नाटककार अपनी बात आसानी से कह व समझा सके। इस तरह नाटक विद्या में लोक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है।

लोक तत्त्व की व्याख्या –

लोक का अर्थ है– कोई ऐसा विशेष स्थान जहां के लोगों के रीति–रिवाज, उत्सव, संस्कृति, वेशभूषा आदि अलग तरह की हो। पहले लोक का अर्थ 'ग्राम' भी लिखा जाता था, जो संकीर्ण था। लोक शब्द विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है।

डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन, ''लोक शब्द का अर्थ 'जनपद' या 'ग्राम' नहीं है बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई, वह समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान पौथिया नहीं है''[1]

लोक तत्त्व का क्षेत्र बहुत विशाल व विस्तृत है। लोक तत्त्व की कोई सीमा रेखा नहीं है। लोक प्रथाएं, संस्कृति, इतिहास, पुराण, परम्पराऐं, रीति–रिवाज, व्रत, त्यौहार, मेले, उत्सव, पूजा, अनुष्ठान, रूढ़ियाँ, मान्यताएं, आचार–विचार, विचार चिन्तन, रहन–सहन मनोरंजन के विभिन्न रूप आदि सभी को शामिल किया जा सकता है। इन्हीं सबको लोक तत्त्व का क्षेत्र कहा जा सकता है। इनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति लोक साहित्य में होती है।

आधुनिक नाटकों में लोक तत्त्व –

लोक तत्त्व के अन्तर्गत साहित्य की सभी विधाएं आती है जैसे– लोक कथा, गीत, नाटक आदि। जो शिक्षित समाज से लेकर अशिक्षित लोगों के बीच प्रचलित है।

द्वितीय विश्व युद्व में मानव की विचार पद्वति, विश्वास, आस्था, नैतिकता सभी में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया। पश्चिमी देशों ने युद्ध को अधिक भोगा है। इसलिए वहाँ इसका प्रभाव अधिक रहा। पश्चिम का यह प्रभाव भारतीय रहन–सहन पर भी पड़ा है। भारतीयों ने यह मानसिक कष्ट उतना व्यवहारिक जीवन में नहीं भोगा। पश्चिम की देखा–देखी ही कुण्ठा व अनास्था का चित्रण इस बीस–पच्चीस वर्षो में होता रहा। उस पीड़ा,

घुटन व दर्द का एक रस चित्रण सहित्य में मुख्य रूप से हुआ है। साहित्य में लोक तत्व के प्रवेश ने तपती धूप में ठंडी बूंदों का काम किया है।

लोक कथाओं, गीतों व इतिहास आदि को अपने नाटकों का विषय बनाकर वर्तमान का वर्णन करना नाटककारों का मुख्य उद्देश्य था। मंहगाई, बढ़ते अपराध, बेरोजगारी, सामाजिक अव्यवस्था से ग्रस्त जनता ऐसा कुछ चाहती थी, जिससे उनके विचारों को सन्तोष तथा आक्रोश को अभिव्यक्ति मिले तथा मनोरंजन का साधन बनकर उन्हें तनाव से मुक्ति भी दिला सके। सहज यह इसलिए है क्योंकि लोक का रस व रंग हमारे संस्कार, हमारी परम्परा व हमारे रक्त में है।

लक्ष्मीराय ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है :–

''वस्तुतः मुनष्य अनजाने ही अपने समाज और जाति की परम्पराओं को आत्मसात् किए हुए है। इस सामूहिक अवचेतन में अख्नायक पात्रों और विषयों में युग–युग से संचित मनोभाव निहित रहते हैं। उनमें किसी समाज और जाति की स्मृतियाँ बड़ी गहराई से अंकित होती है। इसलिए आधुनिक युग में अनेक नाटककारों और कवियों का ध्यान मिथक और इतिहास के प्रसंगों की ओर गया है।''[2]

नाटककारों ने उपेक्षित पड़े लोक तत्त्व को साहित्य में शामिल किया। स्वतन्त्रता के बाद लोक–रंग या परम्पराओं से साहित्य को नई दृष्टि मिली।

मोहन राकेश के नाटकों में लोक तत्त्व –

मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों का राजहंस', ऐतिहासिक धरातल पर आधारित होकर भी आधुनिक जीवन की व्याख्या करता है। 'नन्द, बुद्ध, कालिदास आदि ऐतिहासिक पात्र भी ऐतिहासिक भावना से विरहित साधारण मानव की लछता, द्वन्द्वमयी चेतना, त्रासदी एवं अवसादपूर्ण नियति को उभारते नजर आते है।[3]

राकेश के अतीत के कथानक और चरित्रों से आधुनिक भाव को अभिव्यक्त करने का अच्छा प्रयास किया है। डॉ॰ गोविन्द चातक के शब्दों में – ''उन्होंने इतिहास का उपयोग एक विश्वसनीय खूंटी के रूप में किया है जिस पर वे अपने नाटकों के आधुनिक कथ्य को टांग सके। युग और इतिहास के बीच में वैचारिक खाई की परवाह न कर राकेश ने अतीत के कथानक को अपने युग की संवदेना और ज्वलंत प्रश्नों से जोड़ने का प्रयास किया। इतिहास की जनमानस पर एक विशिष्ट छाप होती है। किसी ऐसे कथानक भाव या चरित्र को जो इतिहास में स्वीकृत हो, पाठक, प्रेक्षक के लिए स्वीकार करना भी सरल होता है।''[4]

सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में लोक तत्त्व :–

सुरेन्द्र वर्मा ने भी अपने नाटकों में ऐतिहासिक पात्रों को निर्णय के क्षणों की आकुलता, द्वन्द्व की मनःस्थिति का चित्रण किया है। 'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की प्रथम किरण तक' एक सशक्त नाटक है। डॉ॰ जयदेव तनेजा के शब्दों में, ''यह नाटक समसामयिक स्तर पर मूल्यों में बदलाव के संदर्भ में दाम्पत्य सम्बन्धों की गहरी और बारीक छानबीन करने के साथ–साथ शासक और शासन–तंत्र के आपसी रिश्ते के विश्लेषक के माध्यम से सत्ता तंत्र के समक्ष स्वयं सत्ताधारी की विवशता, नपुंसकता और त्रासदी को भी रेखांकित करता है।''[5] इस नाटक में शीलवती व ओक्कांक की ऐतिहासिकता का सहारा लेकर व्यक्ति के आन्तरिक द्वन्द्व पर स्त्री पुरूष की चेतना को सूक्ष्म संवेदनाओं को कई स्तरों पर उभारा है।

डॉ॰ लक्ष्मीराय ने शीलावती की मनःस्थिति पर लिखा है, ''स्पष्टत शीलवती इस ओर संकेत करती है कि जीवन में अनुभूति ही मूल्यवान है। केवल मर्यादा की सीमा और पतिव्रता के खोखले शब्द जीवन को तृप्ति नहीं दे सकते। न संतान की प्राप्ति ही इस तृप्ति का लक्ष्य होती है। शैया् पर नारी केवल भोग्या है, मातृत्व की आंकक्षिणी मार नहीं।''[6] इस प्रकार ये नाटक मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर मानव मन की दबी हुई परतों को मार्मिक ढंग से सफलतापूर्वक वर्णन करता है।

आधुनिकता की यह मुख्य प्रवृति रही है कि हर बात को मनोवैज्ञानिक धरातल की कसौटी पर कसकर देखा जाता है। मानव मन में संस्कार बहुत गहरे समाये होते है। श्री नरनारायण के शब्द, ''दशरथ का बहुपत्नीत्व, कैकयी का प्रेम में बदले राज्य माँगना और तरह प्यार का सौदा करना ही गहरे राम के उस अशुद्ध संस्कार को ही पुष्टि करते हैं। सीता के प्रति राम के अमानुषीय व्यवहार का कारण मनोविश्लेषक स्वीकार करेंगे

कि राम को उनके अधिकार से वंचित करने वाली एक स्त्री थी, कैकयी इसलिए अधिकार प्राप्ति के मार्ग में आयी स्त्री सीता को भी निर्दयापूर्वक ठुकरा सकें।''[7]

लोक तत्त्व की देन –

लोक तत्वों ने आधुनिक नाटकों में पात्रों के चरित्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आंक कर मानवीय धरातल पर स्थापित करने की प्रेरणा दी है। नाटकों के पात्र मानवीय धरातल पर चित्रित हुए हैं। वे मानसिक द्वन्द्वों, जटिलताओं व मनोग्रंथियों को विविध रूपों में वर्णित करते हैं। डॉ॰ बच्चन ने लिखा है– ''तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में आधुनिक जीवन–बोध भी उभारा गया है। मर्यादा का विघटित होना, विवेक की हार, भय और ममत्व के अन्धेपन की विजय, सुन्दर, शुभ–कोमल की पराजय का नाम महाभारत युद्ध की अन्तिम परिणति है। इसे युद्ध की परिणति भी कह सकते हैं। इन स्थितियों से उभरकर बाहर कैसे आया जाए, इसका उत्तर अन्धा युग देता है।''[8] द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जो युग आया, क्या वह महाभारत युग की तरह अनैतिकता व अमर्यादा से किसी भी तरह कम नहीं आँका जा सकता है। आज संसार को भयंकर निराशा, रक्तचाप, अन्धापन और कुरूपता कितनी बुरी तरह घेरे हुए है। गूँगें सैनिकों की दर्द भरी व्यथा आज के परमाणु–युग पर कितना दयनीय व मार्मिक व्यंग्य है। तत्कालीन कथा वस्तु को वर्तमान की समस्याओं व बुराइयों से जोड़ने का काम मुख्य रूप से दोनों पहरेदार करते हैं।''[9]

निष्कर्ष :–

निष्कर्षत हम कह सकते है कि लोकतत्त्व निरर्थक व महत्वहीन नहीं है। नाटककारों ने प्राचीन आख्यानों, इतिहास आदि से सामग्री लेकर वर्तमान परिस्थितियों का वर्णन किया है। लोक तत्त्वों का प्रयोग साहित्य में नाटकों के अलवा कहानी, उपन्यास आदि में भी किया गया है। 'मोहन राकेश' के नाटकों में ऐतिहासिक पात्रों की मदद से वर्तमान परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। वर्तमान के साथ पात्रों का सामंजस्य स्थापित करने के साथ ही लोक तत्त्वों को भी नई दिशा व आयाम मिला है। लोक तत्त्वों की मदद से नाटककारों ने आधुनिक मानव की परेशानियों, पीड़ाओं, दर्द व घुटन को दिखाने का प्रयास किया है। नाटककार लोक तत्त्वों का प्रयोग करके अपने धरातल से जुड़ा रहता हैं। भारतीय साहित्य में 'लोक तत्त्व' एक अहम भूमिका निभा रहा है।

संदर्भ–सूची :–

1. लोक साहित्य सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ॰ श्री राम शर्मा, (पृ॰स॰–4)
2. आधुनिक हिन्दी नाटक– 'चरित्र सृष्टि के आयाम' – डॉ॰ लक्ष्मी राय, (पृ॰स॰ 341)
3. आधुनिक हिन्दी नाटक– 'चरित्र सृष्टि के आयाम' – डॉ॰ लक्ष्मी राय, (पृ॰स॰–372)
4. आधुनिक नाटक का मसीहा– मोहन राकेश– गोबिन्द चातक (पृ॰ स॰ 118)
5. समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच– जयदेव तनेजा (पृ॰स॰–116)
6. आधुनिक हिन्दी नाटक– 'चरित्र सृष्टि के आयाम' – डॉ॰ लक्ष्मी राय, (पृ॰स॰ 42)
7. हिन्दी नाटक और नाट्य समीक्षा– नर नारायण राय (पृ॰स॰ 38–39)
8. हिन्दी नाटक– बच्चन सिंह (पृ॰स॰–206)
9. हिन्दी नाटक– बच्चन सिंह (पृ॰स॰–212)